कलावसुधा

प्रदर्शकारी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका

ISSN-2348-3660

जुलाई–सितम्बर, 2024

Peer Reviewed

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा
सरस्वती सम्मान प्राप्त पत्रिका

क
ला
व
सु
धा

पारसी रंगकर्म प्रसंग

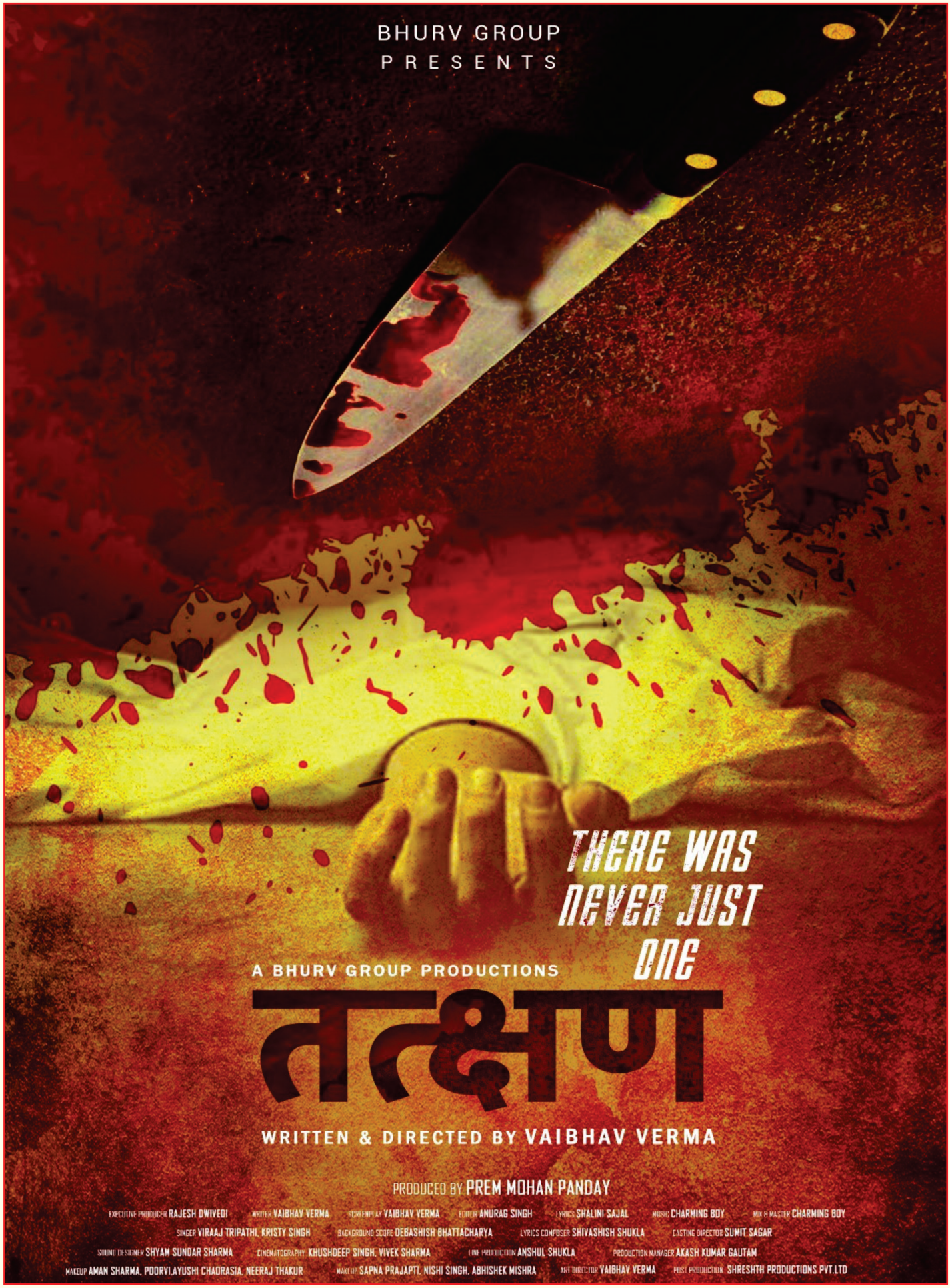
BHURV GROUP
PRESENTS
THERE WAS
NEVER JUST
ONE
A BHURV GROUP PRODUCTIONS
तत्क्षण
WRITTEN & DIRECTED BY VAIBHAV VERMA
PRODUCED BY PREM MOHAN PANDAY
EXECUTIVE PRODUCER RAJESH DWIVEDI
WRITER VAIBHAV VERMA
SCREENPLAY VAIBHAV VERMA
EDITOR ANURAG SINGH
LYRICS SHALINI SAJAL
MUSIC CHARMING BOY
MIX & MASTER CHARMING BOY
SINGER VIRAAJ TRIPATHI, KRISTY SINGH
BACKGROUND SCORE DEBASHISH BHATTACHARYA
LYRICS COMPOSER SHIVASHISH SHUKLA
CASTING DIRECTOR SUMIT SAGAR
SOUND DESIGNER SHYAM SUNDAR SHARMA
CINEMATOGRAPHY KHUSHDEEP SINGH, VIVEK SHARMA
LINE PRODUCTION ANSHUL SHUKLA
PRODUCTION MANAGER AKASH KUMAR GAUTAM
MAKEUP AMAN SHARMA, POORVI.AYUSHI CHADRASIA, NEERAJ THAKUR
MAKEUP SAPNA PRAJAPTI, NISHI SINGH, ABHISHEK MISHRA
ART DIRECTOR VAIBHAV VERMA
POST PRODUCTION SHRESHTH PRODUCTIONS PVT.LTD

कलावसुधा

प्रदर्शकारी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका

■ वर्ष : 24 ■ अंक : 45 ■ जुलाई–सितम्बर, 2024

ISSN-2348-3660

Peer Reviewed

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा सरस्वती सम्मान प्राप्त पत्रिका

सलाहकार मण्डल

1. पद्मश्री डॉ. पुरू दाधीच
2. पद्मश्री दया प्रकाश सिन्हा
3. पद्मश्री राम दयाल शर्मा
4. डॉ. श्याम सुन्दर दुबे
5. पद्मश्री प्रो. ऋत्विक सान्याल
6. पद्मश्री रामचन्द्र पुलावर
7. प्रो. सुरेन्द्र दुबे
8. प्रो. राधेश्याम जायसवाल
9. प्रो. सुनीरा कासलीवाल व्यास
10. प्रो. कुमकुम धर

समीक्षा मण्डल

1. प्रो. के. शशी कुमार
2. प्रो. संगीता पण्डित
3. प्रो. राजेश शाह
4. प्रो. उषा सिन्हा
5. प्रो. अनिल बिहारी ब्योहार
6. श्रीमती मन्जरी सिन्हा
7. डॉ. दीक्षा नागर
8. शशांक दुबे
9. कुमार अनुपम
10. डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा

सम्पादकीय मण्डल

1. डॉ. महेन्द्र भानावत
2. डॉ. चेतना ज्योतिष ब्योहार
3. प्रो. ऋचा नागर
4. डॉ. अरविन्द कुमार
5. डॉ. वीरेन्द्र निर्झर
6. भारत रत्न भार्गव
7. डॉ. गौतम चटर्जी
8. डॉ. ज़ाकिर अली 'रजनीश'
9. प्रो. डॉ. चन्द्रशेखर कणसे
10. प्रो. डॉ. बलीराम धापसे
11. प्रो. डॉ. सुभाष चन्द्र सिंह कुशवाहा
12. डॉ. अपूर्वा अवस्थी

प्रधान सम्पादक	सम्पादक	सह–सम्पादक
शाखा बंद्योपाध्याय	डॉ. उषा बनर्जी	डॉ. ज्योति सिंह

सम्पादकीय ठिकाना :

कला वसुधा 'सांझी–प्रिया' बी–8, डिफेन्स कालोनी,
तेलीबाग, लखनऊ – 226029

R.N.I. No. : UPHIN/2001/6035

ISSN-2348-3660

वेबसाइट : **https://www.kalavasudha.com**

ई–मेल : **kalavasudha01@gmail.com**

मो. : 8052557608	मो. : 9889835202	मो. : 8009800436
(प्रधान संपादक)	(संपादक)	(सह–संपादक)

''कला वसुधा का वेब अंक आप
Not Nul (https://www.notnul.com) पर पढ़ सकते हैं।''

कलावसुधा
प्रदर्शकारी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका

■ वर्ष : 24 ■ अंक : 45 ■ जुलाई–सितम्बर, 2024

ISSN-2348-3660

Peer Reviewed

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा सरस्वती सम्मान प्राप्त पत्रिका

सिलसिला.....

पारसी प्रसंग

कहना–सुनना 4

1.	असली नाटक	–स्व. डॉ. मुहम्मद शफी	7
	चरखारी थियेटर और आगा हश्र		11
	आगा हश्र काश्मीरी का व्यक्तित्व		15
	आगा हश्र के समकालीन नाटककार तथा उनकी रंग चेतना		19
2.	पारसी रंगमंच : एक अध्ययन	–प्रा. डॉ. चंद्रशेखर कणसे	28
3.	पारसी रंगतकनीक और हिन्दी रंगमंच	–राणा प्रताप यादव	34
4.	नाट्यशास्त्रानुकूल पारसी रंगमंच का रंग–विधान और दर्शक–वृंद : एक विश्लेषण	–अविनाश तिवारी	38
5.	पारसी रंगमच : कोई उम्मीद बर नहीं आती	–डा. ललित कुमार सिंह	42
6.	पारसी रंगमंच और आगा हश्र कश्मीरी का योगदान	–डॉ. चंद्रिका प्रसाद दीक्षित ललित	47
7.	आधुनिक रंगमंच के शुरुआती दौर में पुनः स्त्रियों के प्रवेश में पारसी रंगमंच का योगदान	–आरती चौरसिया	49
8.	संदर्भ : आगा हश्र काश्मीरी हिंदुस्तानी शेक्सपियर आगा हश्र काश्मीरी	–जाहिद खान	53
9.	चरखारी में पारसी नाट्य ग्रह और भारतीय नाट्य परंपरा	–डॉ. श्याम सुंदर दुबे	56
10.	"भारतीय रंग–चिन्तन और पारसी रंगमंच"	–अभिषेक कुमार	59
11.	छत्तीसगढ़ में पारसी थियेटर का गढ़ शिवरी नारायण	–योग मिश्र	65
12.	नौटंकी का पारसी रंगमंच पर प्रभाव	–आदिल सैफी	67
13.	मोक्ष प्राप्ति के लिए स्त्रियां ही क्यों – आगाहश्र कश्मीरी	–प्रियंका सिंह	69
14.	पारसी रंगमंच का प्राम्भिक गौरव एवं समकालीन स्थिति : एक अध्ययन	–जय प्रकाश तिवारी	71
15.	आगा हश्र कश्मीरी की शायर जुबानी	–चित्रा मोहन	74
16.	भारत के सांस्कृतिक विकास में पारसी रंगमंच का योगदान	–डा. अल्का मणि	77
17.	शोध लेख पारसी रंगमंच की प्रासंगिकता	–डॉ० सुबाष चन्द सिंह कुशवाहा	80
18.	पारसी रंगमंच समावेशित रंगकर्म की परंपरा	– पार्वती कुमारी शॉ	85
19.	पारसी रंगमंच	–डॉ. रुक्मिणी जायसवाल	89
20.	निर्देशक (हिदायतकार) की कलम से पारसी रंगमंच	–जफर संजरी	91
21.	जहाँ 'सीता बनवास' लिखा और खेला गया	–स्व. महेश अवस्थी	93
22.	पारसी रंगमंच के इतिहास–पुरुष मास्टर फ़िदा हुसैन 'नरसी'	–स्व. चन्द्रमोहन दिनेश	99
23.	पारसी रंगमंच और आगा हश्र काश्मीरी	–सर्वेश कुमार मणि	103

24.	'पारसी रंगमंच के परिप्रेक्ष्य में बुन्देलखण्ड का चरखारी थियेटर एवं लोक रंगमंच'	–डॉ. सरोज गुप्ता	106
25.	पारसी रंगमंच में आगा मोहम्मद 'हश्र' कश्मीरी, पं. राधेश्याम कथावाचक एवं नारायण प्रसाद बेताब का योगदान	–वर्षा	109
26.	पारसी रंगमंच और राधेश्याम कथावाचक के नाटक	–अंकित दुबे	112
27.	पारसी रंगशालाएँ	–डॉ. ज्योति सिंह	116
28.	अतीत के आगाहश्र कश्मीरी	–सन्तोष कुमार पटैरिया	118
.	ख्वाबे हस्ती नाटक में निहित स्थिति		119
29.	महोबा में सीता वनवास का मंचन	–महेश्वरीदीन तिवारी	122
30.	पारसी रंगमंच : कोई उम्मीद बर नहीं आती	–डॉ. ललित कुमार सिंह	123
31.	रॉयल थियेटर चरखारी	–डॉ. नरेन्द्र अरजरिया	128
32.	पारसी थिएटर और उत्तर भारतीय लोकनाट्य	–डॉ. बी.के. 'चन्द्रसखी'	130
33.	जब पारसी नाटक देखते समय आपा खो बैठे पं. ईश्वर चन्द्र विद्यासागर	–डा. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक'	135
34.	पारसी रंगमंच : खुली आंखों से स्वपन देखती झांकी	–बालकीर्ति कुमारी	138
35.	रॉयल थियेटर हाल, आज है बेहाल	–राम दत्त तिवारी 'अजेय'	141
36.	पारसी थियेटरों की नाटकीयता से उपजे फिल्मी संवाद हमारी सामूहिक चेतना को जगाते हैं संवाद	–शशांक दुबे	142
37.	चरखारी का पारसी थियेटर	–राम प्रकाश गुप्त	145
38.	पारसी और हिन्दी रंगमंच में छाये रहे मुरादाबाद के पारसी रंगमंच सम्राट मास्टर फिदा हुसैन नरसी	–डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा	146
39.	भारतेन्दु : पारसी एवं भारतीय रंगमंच के सेतु	–डॉ. अवंतिका सिंह	148
40.	चरखारी के गोवर्धन नाथ जू मेले में आगा हश्र कश्मीरी के लिखे नाटकों का मंचन होता था–	–डा० एल० सी० अनुरागी	152
41.	Impact of Parsi theatre on Indian Society	–Dr. Manisha Malhotra	154
42.	पारसी रंगकर्म के कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण छायाचित्र संसार		158
43.	**प्रतिक्रिया**		159

प्रधान सम्पादक
शाखा बंद्योपाध्याय

सम्पादक
डॉ. उषा बनर्जी

सह–सम्पादक
डॉ. ज्योति सिंह

विधि परामर्शी
रमेश चन्द्र पाण्डेय
अजीत श्रीवास्तव

आवरण चित्र
अर्चिता मिश्रा

व्यवस्था सहयोगी
देवाशीष,
पर्ण शिशिर,
ऋचा,
राहुल
रत्नेश

संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली द्वारा आंशिक आर्थिक सहयोग प्राप्त

सर्वाधिकार सुरक्षित
पत्रिका के किसी भी अंश का मंचन प्रकाशन अथवा प्रसारण करने से पूर्व सम्पादक की लिखित अनुमति अनिवार्य है।

पत्रिका से जुड़े सभी व्यक्ति कला सेवा हेतु अवैतनिक एवं अव्यवसायिक हैं।

न्याय क्षेत्र लखनऊ

इस अंक का मूल्य 200/–(पोस्टल व्यय सहित)

सम्पादकीय ठिकाना : कला वसुधा 'सांझी–प्रिया' बी–8, डिफेन्स कालोनी, तेलीबाग, लखनऊ – 226029
वेबसाइट : **www.kalavasudha.com** ई–मेल : **kalavasudha01@gmail.com**
मो. : 8052557608, 9889835202

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक डॉ. उषा बनर्जी द्वारा मुद्रक : प्रिन्टआर्ट ऑफसेट, 33 कैण्ट रोड, लखनऊ RNI - Regd. PRESS/2024/624/00002209
मो. : 9839011924 से मुद्रित तथा 'सांझी–प्रिया' बी–8, डिफेन्स कालोनी, तेलीबाग लखनऊ – 226029 से प्रकाशित।

प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे 'कला वसुधा' और सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

कहना–सुनना

सभी सुधी सहृदय पाठकगण।

सभी को कला वसुधा परिवार की ओर से यथा योग्य अभिवादन।

न ठेठ हिन्दी न खालिस उर्दू,
जुबान गोया मिली जुली हो,
अलग रहे दूध से न मिश्री इसी,
इसी दूध में घुसी हो।

जी हाँ, यह उक्ति मशहूर पारसी रंगमंच के व्यक्तित्व को उजागर करने के लिये एक अहम तथ्य है। कला वसुधा का यह प्रस्तुत अंक पारसी थियेटर पर आधारित है। सोच को कार्यान्वित करने में प्रधान सम्पादक जी को बहुत मेहनत अवश्य करनी पड़ी पर पत्रिका में यह अंक अपने आप में बहुमूल्य लेखकों की लेखनी का गुलदस्ता तैयार हो गया है। मैं अधिक पारसी रंगमंच के संदर्भ में जानकार नहीं हूँ। अतः इस अंक पर कहना सुनना लिखने की यह औपचारिकता ही है। सारी ज्ञानवर्धक तथ्य तो हमारे लेखक विद्वानों ने अंक में हीरे–मोती की तरह बिखेरे हैं। अतः उने कला प्रशाद को आप सभी ग्रहण कर सकेंगे यह प्रसन्नता की बात है।

हमारा सर्वाधिक औपचारिक विशिष्ट रंगमंच के संदर्भ में भरत के नाट्यशास्त्र में पढ़ा है। संस्कृत नाटकों का रंगमंच अत्यन्त प्राचीन काल से समय के साथ स्वरूप बदलता हुआ आगे बढ़ा है जो आज तो प्रायः लुप्त हो चुका है। लोक रंगमंच की परम्परा प्रत्येक प्रदेश की अपनी अपनी थाती के रूप में अत्यन्त रोचक, मनमोहक है जिसके छुटपुट रूप आज भी देखने को मिलते हैं। रासलीला, रामलीला, स्वांग, भगत, नौटंकी, यात्रा, आँकिया नाट, माच, ख्याल लोक–नाट्य आदि अनेकों हमारी लोक परम्परा के धारक हैं। जिनमें कोई औपचारिकता नहीं है।

व्यावसायिक दृष्टिकोण प्रयुक्त नहीं है, दृश्य विधानों की भरमार को औपचारिकता से रहित है। इनमें स्त्री पात्रों के लिये पुरुष ही कार्य करते रहे हैं। यह आमतौर से चारों ओर या तीन ओर से खुला मंच होता रहा है। और दर्शक तथा अभिनेता के बीच की कोई औपचारिक दूरी नहीं देखने को मिलती रही है। ये सब आमतौर से तीज त्योहार पर सामाजिक चंदे के सहयोग से ही चलते रहे हैं। बाद में इनमें कुछ समय के साथ व्यावसायिकता भी कहीं कहीं आने लगी जो समय के साथ परिवर्तन का परिणाम है। किन्तु पारसी थियेटर को भारत में आमद ने रंगमंच का स्वरूप ही बदल कर रख दिया।

आमतौर से भारत में पारसी थियेटर का आना महारानी विक्टोरिया के जमाने में हुआ इससे पहले संस्कृत नाटक एवं लोक नाट्यों की परम्परा का बोलबाला रहा। सन् 1853 में आरम्भ होकर पारसी थियेटर धीरे–धीरे विकसित हुआ। 1981 तक इसका सुनहरा अतीत रहा। आजादी के बाद पारसी रंगमंच में व्यावसायिक रंगमंच को शुरुआत हुई। कलाकार सभी भारतीय थे। पर इसे यहाँ लाने वाले पारसी नाट्य कम्पनियाँ ही थी। पर्शिया से विस्थापित होकर शुरुआत में कदम रखा तो वे पारसी कहलाये इन पारसियों ने ही 1853 के आसपास अंग्रेजी नाटकों को गुजराती में करना आरम्भ कर दिया। इसके अतिरिक्त इन पारसी कम्पनियों ने पौराणिक ऐतिहासिक सामाजिक विषयों को भी नाटक का विषय कथ्य बनाय।

भारतीय रंगमंच में पारसी रंगमंच को प्रतिष्ठित करने वाले अल्फ्रेड कम्पनी के मालिक कावसजी पालक जी खटाऊ जी थे जिन्होंने यहाँ के अनेकों नाट्य प्रेमियों को अपनी अल्फ्रेड थियेटर कम्पनी में पहचान दी जिनमें सबसे मशहूर नाट्य लेखन निर्देशन आगा मुहम्मद शाह हश्र कश्मीरी जी थे। जो कि 13 अप्रैल 1876 को बनारस के प्रतिष्ठित परिवार में जन्मे थे किन्तु अपने परिवार के खिलाफ जाकर पारसी रंगमंच को अपना कार्य क्षेत्र बनाया। अरबी, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी, गुजराती, बंगला, संस्कृत, हिन्दी आदि अनेकों भाषाओं के जानकार थियेटर में दीवानगी के चलते, तालीम के बिना ही शौक और स्वाध्याय के बल पर वे मुम्बई बहुत कम उम्र में ही चले गये थे। उन्हें भरत के रंगमंच, लोक रंगमंच योरोपियन रंगमंच आदि